

DPN 6523

1. देवदेवीस्तोत्र (अष्टमातृका + अष्टभैरवस्तोत्र)

DEVADEVISTOTRA (AṢṬAMĀTRIKĀSTOTRA + AṢṬABHĀIRAVA-STOTRA)

Title :

2.

Run. No. 7248

Cat. No. 165

Micro. No.

Subject Stotra

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt.- New. / Maith.- New. / New.- Nep. /

Size in cms. 17.7 x 8

Folios 23

Lines (in a page) 7/6

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS 885

Ruler / place जयप्रकाश मल्ल

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. : historical note

Material : palmleaf / paper / thyaśaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

1. इति देवदेवीस्तोत्रं समाप्तं ॥ 2. ॐ सि ५ ॥ पराहाविज ॥ इमुनी ॥ इन्द्रजव ॥
वाकुचुसद्धि ॥ किमि मौक्षक्या जुरो ॥ 3. इति श्रीरुद्रप्रोक्तसकत्या देव्याः कवचं
समाप्तं ॥

१६५ देवदेवी स्तोत्रं

१६५ शक्रदेवी चरित्रं

ॐ नमः श्रीवदुकाया वक्रांथे लीवक्रसावित्री वक्रांथे विरुदनित्रुमुजविनेया
 पि वक्रुयगयत्रायनी दंसयक विमानसु सोमययीयिगामही। यस्मै कंजयमानक वलदारुयया
 लिना। वीरययलगादवी यीतांगीयिगवासना यीतायदावर्मकुयु यीतगंधान्नयना नागकलत्र
 नवावसु प्रयागक यवासिनी। यूर्वयी ० छिगानिर्त्य वक्रांकि नमास्तु ॥ १ ॥ मादं श्रीमदा
 दवी मादं मायानवनी मदावृषसमावृता मदाहंकात्रनादिनी हिममकि निर्दंदं कयालनः
 निगधनं विवावनेगीधूलैव अक्षसुगकमधुत्र नासाकात्रसर्वा ह दक्षि (धनवयदा। मृष्टिहि
 उद न्मे ला न ना वे मु ३

निविनासानां सर्वयायिसवध्वरी स्वगययत्रगादवी स्वगान्निखगवासना स्वगवर्णयविक्षानं म
 कारुवहोरुयली कालागित्रीमदाद्वय गानवृद्धनीवासिनी डरुवयि ० छिगानिर्त्य मादं श्री
 वीनमास्तु ॥ २ ॥ मादं मायानवनी मदावृषसमावृता मदाहंकात्रनादिनी हिममकि निर्दंदं कयालनः
 निगधनं विवावनेगीधूलैव अक्षसुगकमधुत्र नासाकात्रसर्वा ह दक्षि (धनवयदा। मृष्टिहि
 उद न्मे ला न ना वे मु ३

15

गस्यामवर्णकि गवृणयविसस्तिन लीखवकगजहसा बहुवर्द्धविहृषिना वक कालामहाः
 कीठा नानारुवलरुषिना हविनययगल्लेथ महाहविनध्वत्रिली। स्वर्गमययानात्र स्तिमिः
 वृयलसेस्तिना जयकिनाममहाकथ यर्कमिहृक निवासिनी मिहृमियी० नेमय नावायली
 नमासुन॥ ४ ॥ वावाहीधात्रकाकि वककलीमहादवी दृष्टकलालगंहीना वावाकवक
 वावनी कयालमातारुवली विविहृयया। लाकिना महामहीयमावृठा कलिनामिसमयुरुषा
 मीनांकलककिंकावृठा दावारुवलरुषिनि विनपुंकलिनंदं इष्टनयतेविपदं। उकाय
 वकउस्तिनानिर्यं वृगवृकसमासुय दक्षिणी० स्तिनानिर्यं कालवृथीनमासुन॥ ५ ॥

10

गजध्वरीमहासाक्षीकंकमावृलविपदा। सत्रध्वरीमहादवी सर्वलिकात्ररुषली। वरुहुजाः
 विसालाकी दृष्टयन्ताविहृषिनी। महावृद्धध्वनिर्यं स्तिनात्रवाविनिगऊ नानाययनताद
 वी नानावन्नविहृषिना नानागन्धविलिफंगा नानावसुविवाडिना वावालसीमहाकथ अश्वस्त
 वृकवासिनी यश्चिमयी० स्तिनानिर्यं गजध्वरीनमासुन॥ ६ ॥ वामध्वीवृष्टिकावृष्टि वृष्टाः
 वृष्टाध्वीवृष्टिनी। वृष्टादहासवृष्टाकी यववृष्टवृष्टनासिनी। दृष्टकलालवकाही कथिलकणीः
 कंसादवी। कंसांगीरीषली वौडी डिक्कामवनरीषली। महायनसमावृठा कुऊवृष्टाकिः। ला
 रिना। मृनिवकमयगाऊ मयसमगध्वनिली। कर्किकयालहसापी ववदावृलरुषिना। नः

5

वरमृगादवी वायिदर्मकटिहिता मधुमाधवात्रोदी हावामुवलाहृषिणी हावामुवलाः
 मय्यव अन्विष्ट सुमदाधिया मरुसुसय्यमकासा वामकयेपमिहिता कातामाताकलादवी
 गठिकादिसमयुगा रुगवगाउजकिन्ना यदिवानवत्राकसा दवीकाटमहाकुरु उडम्वत्रसः
 मासिनी वाययी ० समैल्लन वामुआयेनमानमशा ॥ १ ॥ महालक्ष्मीमहादेवी मारुग्यगुहाः
 मन्दरी वेङ्गय्याइकावृडा सिंहासनहितामधी वरुङ्गमावितालाकी लखवकुगदाधवी
 नोयवादावकयवा वत्तककुलधविही वत्तककुलैधविही खविगमवीहिं वृजमलिविः
 रुषिगा विविगययवत्ताव वमुगन्धानूयनी उलाय्यायिही दवी सर्वल्लमववावर्

सिद्धिगन्धर्वनमिगा विद्याधरमन्त्रिगा वरिष्ठमहाकुरु वटवृक्षमन्त्रिगा वीमानयीः
 ० हितानिर्णय महालक्ष्मीनमासुग ॥ ८ ॥ अष्टकुरुहितादवी अष्टकुरुकानिवासिनी अ
 ष्टकुरुनवमयक अष्टमारुनमासुग ॥ जननी सर्वरुगानां सर्वसत्वायकाविही सर्वदायकः
 वादवी संसात्रयासद्धदनी ॥ त्वमवसर्वमासु त्वमवष्टानिद्वयीही त्वमवसृष्टि सहावी
 त्वमवसृष्टिमिद्वयीही ॥ त्वमवसर्वद्वयीही त्वमवविधद्वयीही ॥ धी ० ध्वत्रमहादेव दवदवंमहात्मन
 रुववंरीषर्वात्रोदं धावर्गरीवद्वयीही ॥ नीलाञ्जनिरुददं महाकायमहात्मवं ॥ नानाशुभ
 समाकीर्णं नानावसुधवासुगा जिलावनमहागडा अग्निसय्यसमयुगा रुवत्रामसमुत्र

XXXXXX

दावानिसमस्तुसा। शिगुलमधुखद्वंग उमरुर्गुलीधुर्गु॥ यात्रिजार्गकामर्कवा खमवर्मधवा
 धुरा॥ यात्रीकगधवादेवी वडाधुविगजधवा। कयालकलिकात्रुं गजवर्मवगुधनं। दय्याक
 लालवदनी याधुवर्मक विठिगु॥ सालीकालीसर्वीन नुलाहियय्य॥ रिगा। लीधमाता
 धवादेवी कयालाललिकारुमं॥ वृजामलिमदागर्ज कयालीवन्दु रुषली मदायुगामनानिर्य
 नृममानामेधयिया। सर्वीरिनसमंजं वृगाविशुवमनिरुं। वरुषी० छिगानिर्य अरुदः
 उनिवासिनी॥ अरुमरुछिगादेवी अरुयागिलीयिय। रुदयी० छिगानिर्य रुदकालिसमा
 यता। रुदकात्रहाकर्णं वीवरुदंनमासुग॥ अग्निगंगनवव वगुधकोधरुववाड

मरुंरुववंवेवं कायालिरीषलसुथा॥ संरुववेवअरुंरु लवासुनमासुग॥ स्वच्छनखाधि
 कानाध स्वसुनयीसुदीर्यकधसुसकार्ययवरुंरु दियानुवीकरुमिया॥ दगदिकदुयाः
 लाधदगाधेववरुदंन॥ र्यवागदुयालं व दुरयालंनमासुग॥ नाथनाथमदानाथ आदि
 नाथमदाना। प्रीनार्थसिद्धिनार्थव मीननार्थनमासुग॥ कुरुनार्थवयी० कुरु दीयनार्थम
 दाना। यगनार्थवरुंरु वकठनार्थनमासुग॥ विनार्थनवनार्थव याठगनाथमरुमी। सया
 विंगदियबाग वीवालीनिनमासुग॥ सर्वर्षानाथसिद्धानां सकानांवेकलात्यय। योगसद्यः
 तथावीवं नत्सर्ववनमासुग॥ एकाकालेकिकालय यय० निनवासुथा। य० लासर्वमा

15

10

5

१॥सि॥ यनादाविडा॥ॐ मूनी॥ॐ तुजव॥चाकूदनकि॥कि
 मिभाश्वकयाइया॥४॥१॥धवा॥विपनि॥धवा॥श्वहनम॥
 धवा॥कायहन॥जुता॥कमुति॥१॥गहनश्वहन॥हनन॥स
 ध॥जवन॥ॐ मूनी॥नवद॥जितरान॥शुनिकाया॥१॥श्वधि॥
 केन॥धकन॥जुनिपियाय॥सधू॥मिखाया॥
 १॥गहनश्वहन॥विपनि॥ॐ मूनी॥हनन॥जवन॥सधू॥मन
 च॥जितराननवन॥नवदंड॥श्वनिका॥नशाकया॥इनाडुका

१॥जितराननवन॥मनच॥जानयति॥निवेसि॥वृकद्यानथति
 ननड॥॥१॥मभव॥जुथालयाय॥लखसदि॥काना॥न॥जुमूल॥विपनया॥
 १॥मभव॥कालवास॥लखसुवू॥याढदि॥शुनिजि॥कानय
 नय॥धनकाया॥विनया॥मभव॥नलषुनिया॥नावुद
 यकू॥स॥मिया॥नय॥धन॥न॥चु॥याढदि॥कानयविन
 नितयमा॥न॥नय॥धन॥का॥डो॥या॥दिगजुन॥पि॥धिन
 वू॥याढ॥क॥मि॥स॥को॥ढ॥न॥क॥छा॥उ॥ल॥ख॥न॥न॥मान
 को॥द॥य॥क॥वा॥स॥न॥थ॥॥को॥द॥उ॥डि॥य॥वा॥स॥न॥थ॥॥उ॥
 डो॥जो॥न॥न॥य॥डो॥न॥स॥डि॥मि॥॥

15
10
दिसु ६४। नि नि का ता नू को य नि ४। स्त न् थ ष गु ध लि ३४
वा द्म य व र्ज धा नि नि ४। रु स या न् रु धा नि च ४। ज्मि का च
गु नि रु थ ४। न वान स न् श्व नि न रु ४। क्क र्ज व क्क श्व नि न थ
४। न नो न क्क म रा द वि ४। म न ॥ क वि ना स नि ४। द्द य न
लि ता द वि ४। उ द न् सु क वा ४। नि ४। ना रि का यी सु ग ध र
४। गु द्द गु द्द श्व नि न थ ४। द्ग धा य म् म य च ४। क्क श्व र्ग

5
व ति न थ ४। र्ज द्या म रा व ना धा का ४। ज न्म ॥ धा वि ना य की
४। गु द्द या ना न सिं हा च ४। या द प ष च न ३। सि ४। या दी गु लि
सि ध नि ल क्क ४। रु न्म या ता न वा सि नि ४। द्द क ना नि नि वी न
क्क ४। क्क न्ना धा र्ज क्क सि नि ४। ना म क्क य गु र्का वा नि ४। र्ज व
न क्क ४। स र य पु दा ४। न क्क म जा व सा म्म ४। ज्मि म्म धा ध य
व ती ४। ज्ग नि का न ला ण च ४। धि न् च म्म क्क न्म नि ४। य म्म

वतियमकाक ॥ कहु च्छाम नितधा ॥ गानाम्बानरवडाप
॥ अरुद्यासर्वसंष्टिषु ॥ शुक्रवसानिमनकृच्छायचक्रुः स्थनित
था ॥ मनोदकानवृद्धिच ॥ नकृम्यधर्मधामिनि ॥ यानाया
र्त्त ॥ गथाद्यान ॥ सुगान्दानसमानया ॥ वडादुसावमनकृ ॥
यानकनसुभरन ॥ नप्रयवगध ॥ सदस्य ॥ गुरुद्या
तिनि ॥ सलनउस ॥ ध्ववि ॥ नकृनायायलीसुधा ॥ आयुमनकृ
वानादि ॥ धर्मनकृगुर्वी ॥ पूगनकृमहानक्रि ॥ प्राय्या

नकृगुरुनवि ॥ विरुनकृ ॥ न्याय नि ॥ र्यग ॥ कागिवनायुर्व ॥
यंननिचयथनकृ ॥ दिउ न्येसर्वसंमि ॥ नक्रादिनवयसुन ॥
यउगकवचुन ॥ गतसर्वनकृम्यदवि ॥ अयनीपायनासिनि
॥ लकृमसर्वगगति ॥ उ ॥ नदुर्गयहापिति ॥ ॥ नुदुदवाक
वर्य ॥ र्ययथगतदंनन ॥ सर्वपार्थदिनिमूक ॥ सकृनामय
नाजित ॥ र्यमयकवर्यक ॥ संगुमयुवि ॥ नन ॥ सभवदावि
यनस ॥ वाननिजिगुदेयु ॥ सर्वगुयार्थननकृ ॥ दानि

स

दुपुनागर्न ॥ श्रीकन्या न वा प्राप्ति ॥ विनंति विरुषत्तन ॥
 रुयागामुच ग रिषा ॥ वक्षामुचतिवधना ॥ नागमामुच
 न नाग ॥ द्वायाधि नरु ग धन ॥ रायाथानरु ग राया ॥ मयुग
 नरु दसुर्ग ॥ वृत्तिगानरु ग कामा ॥ रुवन्नृपतिवर्न ॥ मरु
 ध्वनं कर्तकवर्च ॥ सफसयासु ॥ अरुन ॥ ज्ञा द व कवर्चक
 त्वा ॥ य ॥ सफसुतिउय ॥ सति द्विराउनानुय ॥ गैनाक
 तु व विक्रमो ॥ वृत्तिगानरु यो कसकया देवा ॥ कवर्चस
 माय ॥ ३॥ ॥

१ संमत् २५० अष्टशुकयायू नू मासि ध्व
 दू मूत्रनकुगु ॥ शुकवानध्व दू दू श्री ३ ॥ ३
 व्यसिस देवया गान न खून ॥ रू याय न
 मरु ॥ धन धक्क ॥ द्वा न क स ना का
 जय युका गान ॥ संमत् २५० रादुशुक
 १४ ध्व दू यदस ॥ पृथि ना राय
 न ना जान कात्र ॥

१ संमत् २५० अष्टशुकयायू नू मासि ध्व
 दू मूत्रनकुगु ॥ शुकवानध्व दू दू श्री ३ ॥ ३
 व्यसिस देवया गान न खून ॥ रू याय न
 मरु ॥ धन धक्क ॥ द्वा न क स ना का
 जय युका गान ॥ संमत् २५० रादुशुक
 १४ ध्व दू यदस ॥ पृथि ना राय
 न ना जान कात्र ॥

वामरुयसाधनलायाया
कियुडोउनेयगुधेनरु
नेधेविहनाधविनमसु
ले॥

रवेदनामीवमाजामी ७३
नायिर्कुसाडासाउवादि
हसामलिवात्रुमयिवा
य॥ ॥दातेयनिवालसुसा
यनिवात्र॥अयाजुधकु
व्यात्रिखुर्कुव॥ ॥

15

10

5

0

cmts.

5

10

15

20

25

१॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 २॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ३॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ४॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ५॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ६॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ७॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

२॥ भगवते वासुदेवाय नमः ॥
 वासुदेवाय नमः ॥
 ॥ भगवते वासुदेवाय नमः ॥
 वासुदेवाय नमः ॥

२. अथ विष्णुः ॥ यत्र, व्यवहृ, विष्णुर्क, विनि सारव, धनि
दुर्लया हा, खाउलख सनया भाँ केन सिद्धवा ध्र ॥
मन सिद्धया वा स ध्र ॥

15

10

51

A circular ink stamp from the National Library of Medicine, Washington, D.C. The text "National Library of Medicine" is curved along the top inner edge, and "Washington, D.C." is curved along the bottom inner edge. The center of the stamp contains a stylized caduceus symbol.

cmts.

5

10

15

20

25



15

10

5

0

cmts.

5

10

15

20

25

१ सं ५५४ का हि ७१ सं ना ७७ अ आ
 दि भं सं स व म क का ल र र
 व न नु र ना न सा नि र उ र ना न
 म र र ना स र्क म क न सि क
 क य र्क अ वि ल ना न व डि
 २ सं ५५५ का हि ७१ सं ना
 वु य न ना वि भं न स व र
 क का न व डि र्क क अ र
 र्क या न र्क र ना न व
 य स र्क का र ना र र
 दा नि र्क र ना न व ना वि य
 मा ना ॥

१ क वि द स स का मा थि द वि
 २ स ध ना द स स मि ना थि द वि
 ३ का मि द र स वि स ना डि द वि
 ४ अ भे द ना उ द र न म धि थ थ
 ५ व स र य पु न म वि स र ना न क र
 ६ मा य र उ क पु न म न स ना न क र
 ७ का हि क र उ क पु न म र्क हि का
 न र र थ ना द र य र्क ॥

१ वृत्तानि ॥
१ वृत्तानि ॥
१ कोमोत्रा ॥
१ मोहव्यनी ॥
१ गल ॥
१ वृत्तानि ॥
१ गल ॥
१ शिवनायाय ॥

१ उक्त
१ श्रीवृत्तानि ॥
१ श्रीसिद्धिलक्ष्मीमूल ॥

१ दून

१ वृत्तानि ॥
१ वृत्तानि ॥
१ वृत्तानि ॥
१ वृत्तानि ॥

१ दून ॥
१ वृत्तानि ॥

१ उक्त
१ वृत्तानि ॥

१ वृत्तानि ॥
१ वृत्तानि ॥

१ वृत्तानि ॥



Handwritten text in Arabic script, likely a continuation of the previous page.

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

40 11 11 11 11

[illegible][illegible]

15

10

5

0

cm.

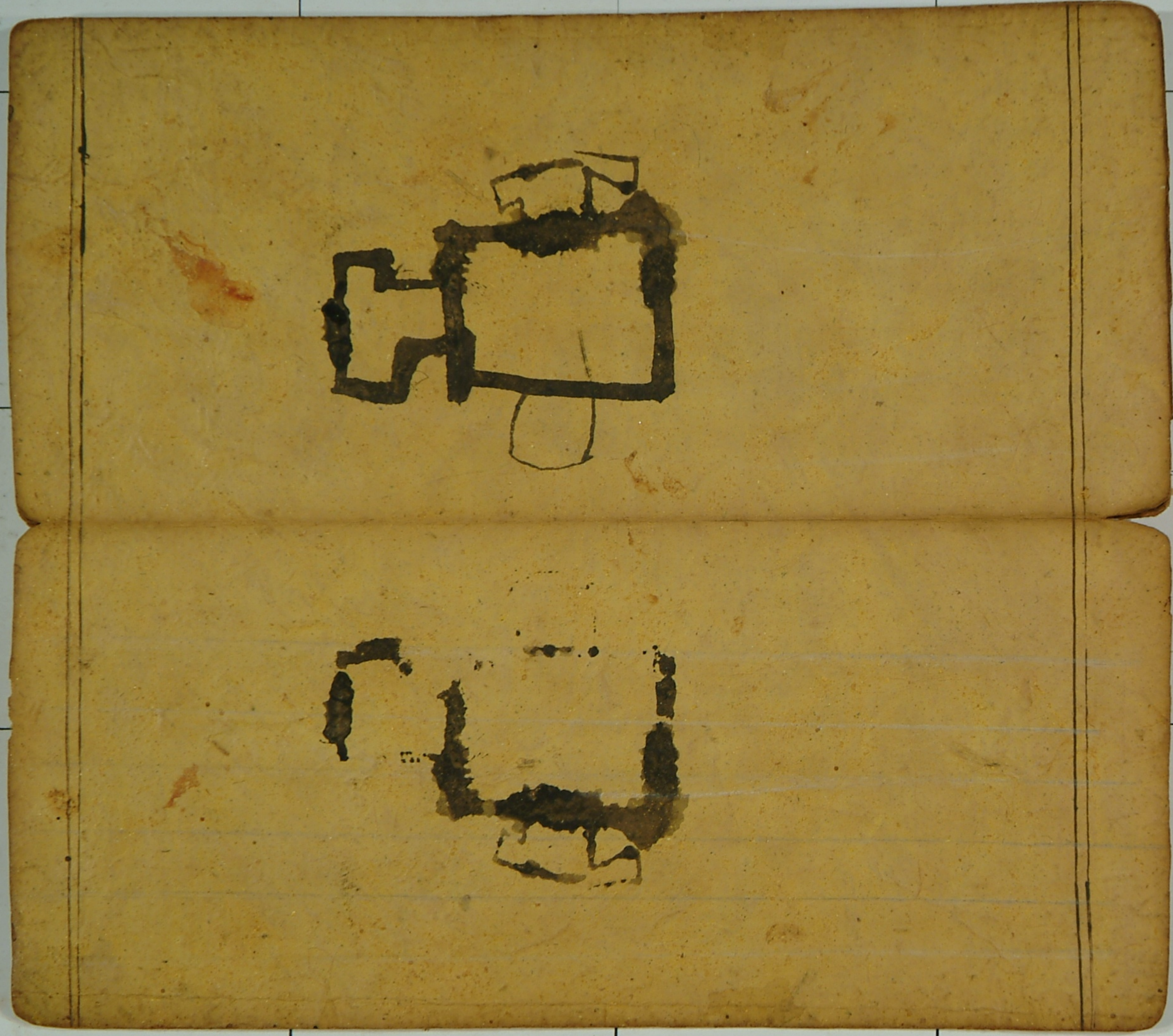
5

10

15

20

25



15

10

5

0

cmts.

5

10

15

20

25



Handwritten text in Arabic script, possibly a date or signature, located below the grid pattern.

